वर्ष:15 | अंक:176 | अगस्त, 2026

मूल्यः ₹5

पू. कैलाश जी 'मानव'

NARAYAN SEVA SANSTHAN

Nar Seva Narayan Seva

सेवा पाती

करुणा से हजारों का कल्याण

संस्थान बन रहा है दिव्यांगों का सहारा

सेवा से संवेदना संवेदना से परिवर्तन

नारायण लिंब से कान्हा को लगे पंख

आपश्री दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह में सादर आमंत्रित हैं।

19 व 20 सितम्बर 2026 उदयपुर

सम्पूर्ण विश्व में सेवा की अखंड ज्योत

आपका छोटा सा दान,
किसी जरूरतमंद के जीवन में
रोशनी ला रहा है।

कृपया अपना अमूल्य सहयोग बनाये रखें।

Donate via UPI

narayanseva@sbi

Visit for More Information
www.narayanseva.org

अनुक्रमणिका

मूल्य ▶ 5 वर्ष ▶ 15 अंक ▶ 176
मुद्रण तारीख ▶ 1 अगस्त, 2026 कुल पृष्ठ ▶ 32

स्वतंत्रता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva

06 | जीवन का सार - श्रीकृष्ण
08 | पितरों का श्रद्धापूर्वक स्मरण ही 'श्राद्ध'
10 | नारायण लिंब से कान्हा को लगे पंख
12 | वरदान से कम नहीं नारायण लिंब : अशोक
14 | रानी के जीवन में उम्मीदों का सूर्योदय
15 | नि:स्वार्थ सेवा का नयनाभिराम संसार
16 | परमार्थ का मार्ग ही कल्याणकारी : मानव जी
18 | अहमदाबाद में उमड़ी उम्मीद
22 | जीते जी सेवा को समर्पित
24 | सेवा की संवेदना से रूबरू हुए अधिकारी

सम्पादक मंडल
मार्गदर्शक ▶ कैलाश चन्द्र अग्रवाल सम्पादक ▶ प्रशान्त अग्रवाल
सहयोग ▶ विष्णु शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद गौड़
डिजाइनर ▶ विरेन्द्र सिंह राठौड़

1-2, वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी, माली कॉलोनी,
उदयपुर (राजस्थान) 313002, भारत
फोन नं. +91-294-6622222 वाट्सऐप: +91-7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

सेवा–पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 अगस्त, 2026 आर. एन. आई. नं. DELHIN/2017/73538,
स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह मो. 09871320593 द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी,
दिल्ली–110006 से प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, फरीदाबाद से मुद्रित। मुद्रित संख्या 1,00,000 (मूल्य) 5 रूपये

'सेवक'
प्रशांत भैया

जो चाहोगे सो पाओगे

ऐसा नहीं है कि कोई सफल उद्यमी अथवा खिलाड़ी कभी असफल न हुआ हो। किंतु यदि अर्जुन की आँखों में केवल एक ही लक्ष्य बस जाए, तो वह लक्ष्य का भेदन अवश्य कर देता है। असफलताएँ ही सफलता का मार्ग दिखाती हैं। समय और धैर्य ऐसे दो गुण हैं, जिनके बिना सफलता केवल एक स्वप्न बनकर रह जाती है। जो भी व्यक्ति सफलता के शिखर को छूना चाहता है, उसे इन दोनों गुणों को अपने दैनिक आचरण में शामिल करना होगा। सफलता और संतुष्टि के लिए यह केवल आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य भी है। इसी संबंध में मैं आपसे एक प्रसंग साझा करना चाहूँगा।

एक साधु प्रतिदिन चौराहे पर बैठकर आवाज लगाया करता था कि 'जो चाहोगे, सो पाओगे। अवसर मत खोओ।' बहुत से लोग वहाँ से गुजरते, पर कोई भी उसकी बात पर ध्यान नहीं देता। सब उसे पागल समझकर आगे बढ़ जाते।

एक दिन एक युवक ने साधु की बातें सुनीं और उसके पास पहुँचा। उसने पूछा, 'महाराज! आप कह रहे थे कि जो चाहोगे, सो पाओगे। क्या आप मुझे वह दे सकते हैं, जो मैं चाहता हूँ?'

साधु मुस्कुराया और बोला, हाँ पुत्र! तुम जो भी चाहोगे, मैं तुम्हें अवश्य दूँगा। पहले यह बताओ कि तुम क्या चाहते हो?

युवक ने कहा, मेरी केवल एक ही इच्छा है कि मैं हीरों का बहुत बड़ा व्यापारी बनूँ।

साधु बोला, मैं तुम्हें एक हीरा और एक मोती देता हूँ। इतना कहकर उसने युवक की मुट्ठी पर हाथ रखते हुए कहा, यह दुनिया का सबसे अनमोल हीरा है समय। इसे कभी व्यर्थ मत गँवाना। समय का सदुपयोग तुम्हें हर मंजिल तक पहुँचा सकता है। फिर उसने दूसरी हथेली पकड़ते हुए कहा, यह सबसे कीमती मोती है–धैर्य। जब समय देने के बाद भी परिणाम न मिले, तब इसे याद रखना। जिसके पास समय और धैर्य है, वह संसार में कुछ भी प्राप्त कर सकता है।

युवक ने साधु की बातों पर गंभीरता से विचार किया और उसी दिन से समय का सदुपयोग तथा हर कार्य धैर्यपूर्वक करने का संकल्प लिया। उसने एक बड़े हीरा व्यापारी के यहाँ काम शुरू किया। अपनी मेहनत, ईमानदारी, समय के सदुपयोग और धैर्य के बल पर वह स्वयं एक बड़ा हीरा व्यापारी बन गया। मित्रों, सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे पहले अपना लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है। उसके बाद बुद्धि, विवेक और परिश्रम के साथ निरंतर सकारात्मक बने रहना चाहिए। किसी भी विजेता का उत्कृष्ट प्रदर्शन कुछ ही क्षणों का दिखाई देता है, लेकिन उसके पीछे वर्षों की तपस्या, साधना और कठिन परिश्रम होता है। यदि आप धीरे–धीरे भी आगे बढ़ रहे हैं, तो चिंता की कोई बात नहीं। बस लक्ष्य से कभी भटकिए मत और योजनाबद्ध तरीके से कदम–दर–कदम आगे बढ़ते रहें। समय–समय पर अपने कार्यों की समीक्षा भी करते रहें।

दिन की शुरुआत में ही यह निश्चित कर लें कि आज आपको अपने लक्ष्य के और निकट पहुँचने के लिए क्या करना है। इस पूरी यात्रा में समय, धैर्य और आत्मविश्वास का सदैव स्मरण रखें। प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक अद्भुत शक्ति विद्यमान है। उसका सही उपयोग किया जाए, तो असंभव प्रतीत होने वाले लक्ष्य भी प्राप्त किए जा सकते हैं। एक छोटा–सा बीज, यदि उचित भूमि में बोकर प्रतिदिन पानी दिया जाए, तो एक दिन विशाल वृक्ष बन जाता है। उसी प्रकार मनुष्य भी अपने गुणों, सूझबूझ, परिश्रम और संकल्प के बल पर सफलता के शिखर तक पहुँच सकता है। आवश्यकता केवल अपनी क्षमता को पहचानने, उस पर विश्वास रखने तथा समय और धैर्य के साथ निरंतर आगे बढ़ते रहने की है। ▪▪▪

मन पर रहे विवेक का अंकुश

मनुष्य का जीवन बाहर की परिस्थितियों से उतना प्रभावित नहीं होता, जितना अपने मन से होता है। जब तक मनुष्य मन के दायरे में बंधा रहता है, तब तक जीवन में उलझनें, द्वंद्व और अशांति बनी रहती हैं। मन अत्यंत चंचल है।यह क्षण–प्रतिक्षण इच्छाओं, कल्पनाओं और भावनाओं के बीच भटकता रहता है। इसलिए जीवन की वास्तविक सफलता मन के पीछे चलने में नहीं, बल्कि विवेक के अंकुश से उसे नियंत्रित करने में है।

सुख–दुःख, लाभ–हानि, जय–पराजय, अपना–पराया, ईर्ष्या–द्वेष, मोह–माया, आशा–निराशा मन की अवस्थाएँ हैं। मन यदि इनसे ऊपर उठ जाए तो जीवन का दृष्टिकोण बदल जाता है। मन स्वस्थ हो तो तन की अनेक व्याधियाँ भी कम होने लगती हैं। इसलिए मन को विकारों का घर नहीं, बल्कि शांति का मंदिर बनाइए। समभाव ही स्वस्थ मन की सबसे बड़ी पहचान है।

एक बार भगवान बुद्ध के शिष्यों में चर्चा छिड़ी कि संसार का सबसे बड़ा सुख क्या है? किसी ने धन, किसी ने स्वादिष्ट भोजन और किसी ने वैभव को सुख का आधार बताया। तब भगवान बुद्ध मुस्कुराकर बोले 'यदि धन, स्वाद और वैभव में ही वास्तविक सुख होता, तो तुम सब संसार छोड़कर भिक्षु बनने क्यों आते? ये सब क्षणिक आकर्षण हैं, स्थायी सुख नहीं।'

भगवान बुद्ध ने समझाया कि वास्तविक सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि भीतर जागृत चेतना में है। बुद्धत्व का अर्थ है–मन से ऊपर उठ जाना। जब तक मन चंचल रहेगा, तब तक मोह, भ्रम और दुःख बने रहेंगे। जागृति में आनंद है, जबकि अज्ञान और मूर्छा में केवल पीड़ा है। मनोविज्ञान भी कहता है कि जब सचेतन मन शांत होता है, तब अचेतन मन की अपार शक्तियाँ जागृत होने लगती हैं।

मनुष्य अपनी इच्छाओं का दास बन जाता है और इच्छाएँ ही उसे भटकाती रहती हैं। इच्छाओं पर विजय का सरल उपाय है,चेतना को जागृत करना और मन पर नियंत्रण स्थापित करना। धर्म का श्रवण, सत्संग और श्रेष्ठ व्यक्तियों का सान्निध्य जीवन की दिशा बदल देते हैं। सत्संग केवल ज्ञान नहीं देता, बल्कि विचार, व्यवहार और जीवन–दृष्टि को भी परिवर्तित करता है। संतों का सान्निध्य जीवन के भ्रमों, क्लेशों और मानसिक अशांति का प्रभावी समाधान माना गया है।

वास्तविक सुख अपने–पराये के भेद से ऊपर उठने में है। जब हम दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझते हैं, तभी मानवता का सच्चा स्वरूप प्रकट होता है। यही करुणा, सेवा और आत्मीयता जीवन को सार्थक बनाती है।

महान वही बनता है, जिसके जीवन की लगाम मन की चंचलता के हाथों में नहीं, बल्कि विवेक और आत्मसंयम के हाथों में होती है। जब सुप्त चेतना जागृत होती है, तब इच्छाएँ नियंत्रित हो जाती हैं और मन अनुशासित होकर जीवन को सही दिशा देने लगता है।

एक छोटा–सा दीपक घोर अंधकार को मिटा सकता है। उसी प्रकार जागृत विवेक जीवन के समस्त भ्रमों को दूर कर देता है। इसलिए यदि जीवन में स्थायी सुख, शांति और सफलता चाहिए, तो मन को नहीं, विवेक को अपना मार्गदर्शक बनाइए। मन पर विवेक का अंकुश ही आत्मोन्नति का प्रथम सोपान है और यही जीवन को उत्कृष्टता की ओर ले जाने वाला सच्चा मार्ग है। ▪▪▪

पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव'

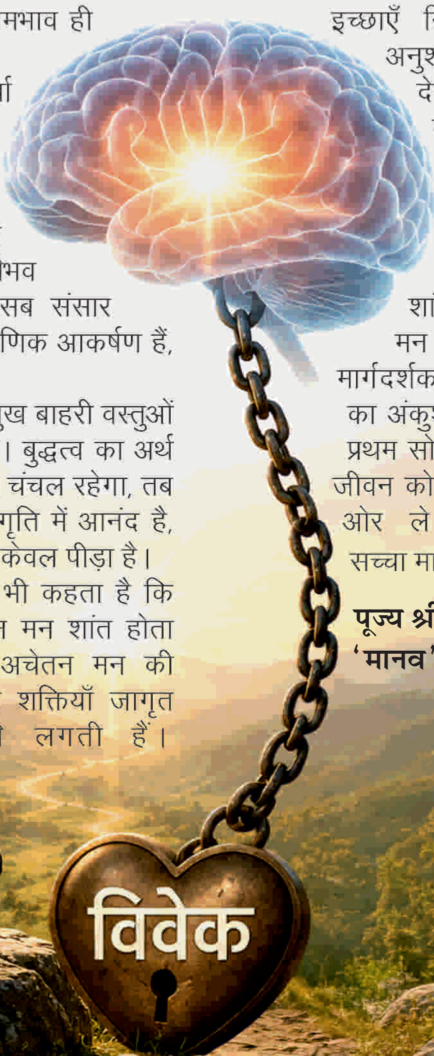

जीवन का सार – श्रीकृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन को दिए गए उपदेशों के माध्यम से जीवन का गहन दर्शन प्रस्तुत किया। यही उपदेश श्रीमद्भगवद्गीता के रूप में हमारे सामने है। गीता में वर्णित शिक्षाओं का अनुसरण करके हम भी अपने जीवन के उद्देश्य को सार्थक बना सकते हैं। श्रीकृष्ण ने केवल उपदेश ही नहीं दिए, बल्कि उन्हें अपने जीवन में आचरण द्वारा सिद्ध भी किया। उनकी शिक्षाएँ कर्म, आत्मसंयम, विनम्रता, सत्य और आत्मा की पहचान जैसे विषयों पर गहन चिंतन करने तथा धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं।

कर्मयोग- श्रीकृष्ण ने गीता में कर्मयोग का संदेश दिया। इसका अर्थ है कि मनुष्य को कर्म करते समय उसके फल की चिंता छोड़कर पूरे मनोयोग और समर्पण के साथ अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। यही सफलता और आत्मसंतोष का मार्ग है।

आसक्ति से मुक्ति- श्रीकृष्ण के अनुसार जीवन की नश्वरता को स्वीकार करते हुए आंतरिक संतोष को सर्वोच्च महत्व देना चाहिए। भौतिक सुख क्षणभंगुर हैं। जब मनुष्य उनसे अत्यधिक आसक्त हो जाता है, तो वह अपने जीवन का बहुमूल्य समय व्यर्थ कर देता है। आसक्ति से मुक्ति ही वास्तविक आनंद और परम शांति का मार्ग है।

सत्य का पालन – श्रीकृष्ण ने सिखाया कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, सत्य का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए। सत्यनिष्ठ व्यक्ति समाज में सम्मान, विश्वास और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

स्वधर्म का पालन – श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपने स्वधर्म का पालन करने की प्रेरणा दी। उनका संदेश है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिए। यही जीवन में संतोष, आत्मविश्वास और आंतरिक शांति का आधार है।

भावनाओं पर नियंत्रण – श्रीकृष्ण ने क्रोध, मोह, चिंता और अन्य नकारात्मक भावनाओं पर नियंत्रण रखने का उपदेश दिया। जब मनुष्य मन को संतुलित रखता है, तब वह कठिन परिस्थितियों का भी सकारात्मक दृष्टिकोण से सामना कर सकता है।

विनम्रता और सम्मान – श्रीकृष्ण ने सिखाया कि दूसरों के प्रति सम्मान, प्रेम और विनम्रता का भाव सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ बनाता है। यह गुण अहंकार को दूर रखकर पारस्परिक सौहार्द और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है।

आत्मा की पहचान – श्रीकृष्ण ने बताया कि आत्मा अमर है, जबकि शरीर पंचमहाभूतों से निर्मित होकर अंततः उन्हीं में विलीन हो जाता है। जो व्यक्ति आत्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचान लेता है, उसे जीवन में आंतरिक शक्ति, निर्भयता और शांति की प्राप्ति होती है। ▪▪▪

श्रीकृष्ण का जीवन और उनके उपदेश भारतीय संस्कृति की ऐसी अमूल्य धरोहर हैं, जो जीवन के विविध आयामों को समझने और सही दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (4 सितम्बर) पर प्रस्तुत हैं – उनकी वे शिक्षाएँ, जिनसे मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

मानवता वह रोशनी जो हर अंधेरे में रास्ता दिखाती है

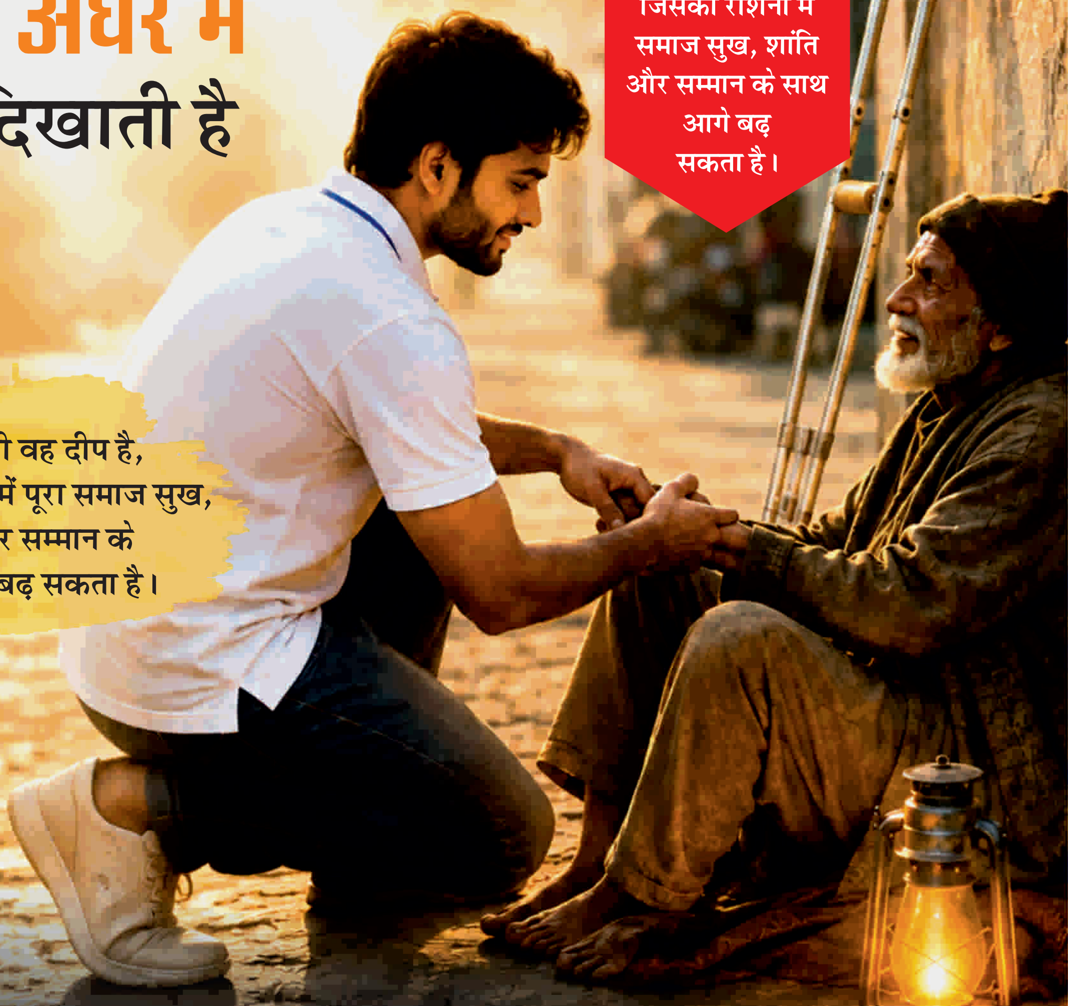

आइए, इस दिवस पर संकल्प लें कि हम किसी के दर्द से मुंह नहीं मोड़ेंगे। मानवता ही वह दीप है, जिसकी रोशनी में समाज सुख, शांति और सम्मान के साथ आगे बढ़ सकता है।

मानवता ही वह दीप है, जिसकी रोशनी में पूरा समाज सुख, शांति और सम्मान के साथ आगे बढ़ सकता है।

किसी भूखे के लिए रोटी बन जाना, किसी रोते हुए के लिए कंधा बन जाना और किसी टूटे मन में उम्मीद का दीप जला देना, शायद यही मनुष्य होने की सबसे सुंदर परिभाषा है। विज्ञान और तकनीक में अभूतपूर्व प्रगति के बावजूद यदि मनुष्य के भीतर से करुणा समाप्त हो जाए, तो विकास का वास्तविक अर्थ खो जाता है।

19 अगस्त का विश्व मानवतावादी दिवस हमें याद दिलाता है कि मानवता केवल विचार नहीं, बल्कि किसी अनजान व्यक्ति के दर्द को अपना समझकर सहायता के लिए आगे बढ़ने की भावना है। दिव्यांगता किसी के सपनों को सीमित नहीं करती, लेकिन उपेक्षा उसके रास्ते कठिन बना देती है। ऐसे में बढ़ा हुआ एक हाथ किसी के लिए सहारा और नई उम्मीद बन सकता है।

इसी भावना को सेवा का आधार बनाकर नारायण सेवा संस्थान देश–विदेश में सेवा शिविरों के माध्यम से दिव्यांगजनों तक पहुंच रहा है। कृत्रिम अंग, निःशुल्क शल्य चिकित्सा, प्रशिक्षण और आत्मनिर्भरता के प्रयासों से हजारों जीवन में नया विश्वास जगाया जा रहा है।

इसी संकल्प को आगे बढ़ाते हुए उदयपुर में 'वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी' का निर्माण किया गया है। यह केवल अस्पताल नहीं, बल्कि दिव्यांगजनों के समग्र पुनर्वास का केंद्र होगा, जहां उपचार के साथ कृत्रिम अंग, फिजियोथेरेपी, प्रशिक्षण और आत्मनिर्भरता की दिशा में कार्य होगा। मानवता की सबसे बड़ी इमारत पत्थरों से नहीं, संवेदनाओं से बनती है। किसी जरूरतमंद की मदद और किसी दुखी को सांत्वना देना ही समाज को मजबूत बनाता है।

पितरों का श्रद्धापूर्वक स्मरण ही 'श्राद्ध'

भारतीय परम्परा में पूर्वजों को नमन, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना और मौजूदा पीढ़ी को अपने पूर्वजों से अवगत कराने की परम्परा ही 'श्राद्ध' है। पितृपक्ष का ध्येय ही पूर्वजों के प्रति आदर प्रकट करना है। इस बार पितृपक्ष 26 सितम्बर से आरम्भ होकर 10 अक्टूबर को सर्वपितृ अमावस्या पर सम्पन्न होगा। भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या तक 16 दिनों को पितृपक्ष कहा जाता है। श्रीमद्देवी भागवत में उल्लेख है कि पुत्र की पुत्रता तीन प्रकर से सिद्ध होती है–पिता के जीवित रहते उनकी आज्ञा का पालन, मृत्यु के पश्चात पितृपक्ष में उनके लिए प्रचुर आहार की व्यवस्था और उनका पिंडदान करना। गयाधाम में पिंडदान से पितरों को परम शांति मिलती है। लोग कहीं भी श्राद्ध करें, उनका संकल्प तो यही होता है–'गयायां दत्तभक्षय्यमस्त' अर्थात इसे गया में समर्पित ही समझिए।

पूर्वजों की स्मृति में श्रद्धापूर्वक जो कर्म किए जाएं, वही श्राद्ध है। यह जीवित लोगों को स्मरण कराते है कि जीवन नश्वर है। जो लोग कभी इस धरती पर रहते थे, वे अब सार्वभौमिक चेतना के साथ एक हो गए हैं। यह शरीर (पिंड) स्थूल जगत (ब्रम्हांड) का एक हिस्सा है। जब आत्मा विदा हो जाती है तो वह उस सर्वव्यापी चेतना के साथ एकाकार हो जाती है, जो निराकार व अगोचर है। भारत में मृतकों के लिए 'तिल तर्पण' नामक एक विधि सम्पन्न की जाती है। अल्प मात्रा में तिल लेकर उन्हें जल के साथ आत्मा की तृप्ति के लिए अर्पित किए जाते हैं। तिल का उपयोग यह बताने का संकेत है कि हम कितने लघु हैं। इस ब्रम्हाण्ड में हमारा महत्व क्या है ? न के बराबर ही, एक छोटे–से रज कणं की भांति! तिल बाहर से काला और भीतर से श्वेत होता है। यह हमें आंतरिक पवित्रता बनाए रखने का संदेश देता है।

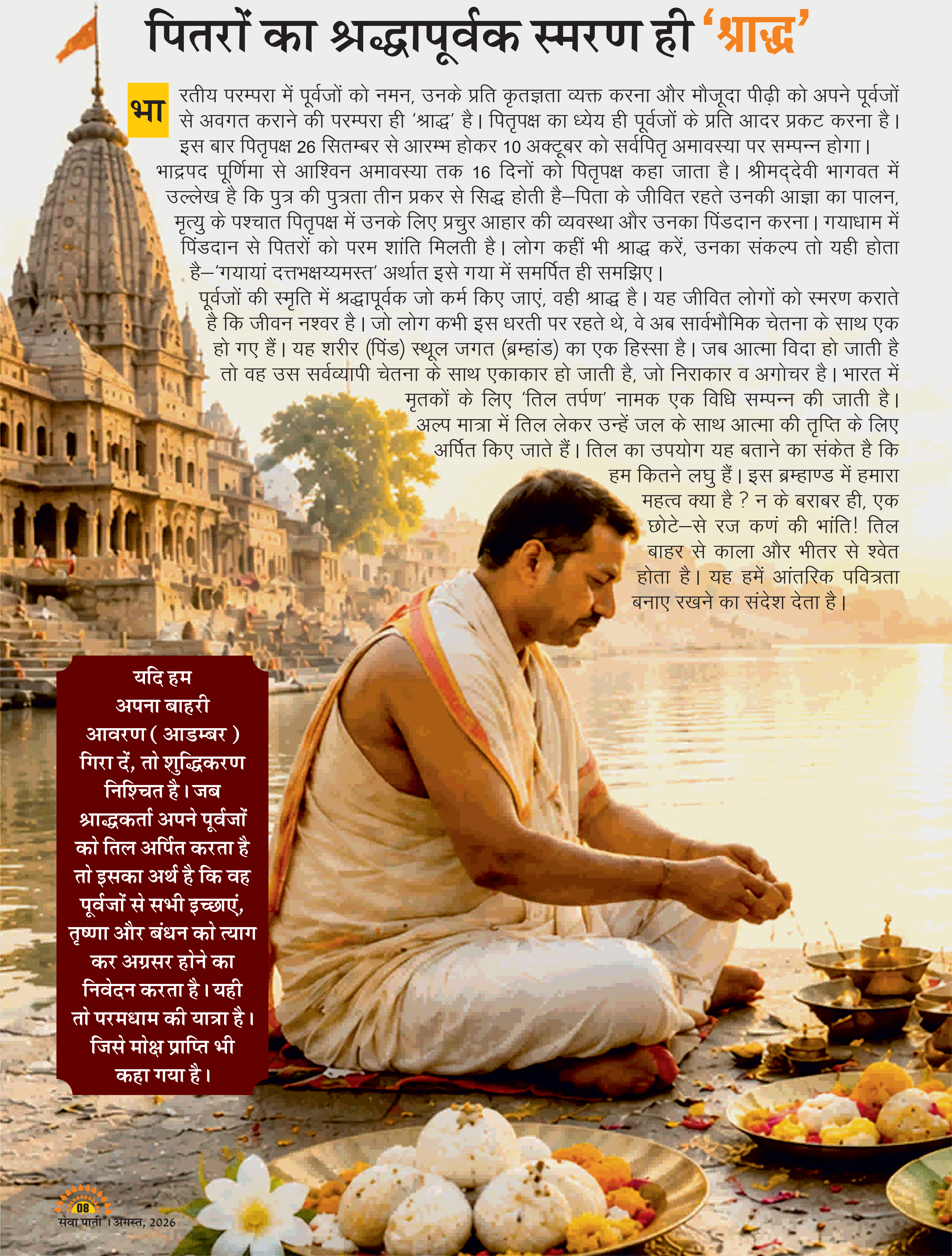

यदि हम अपना बाहरी आवरण (आडम्बर) गिरा दें, तो शुद्धिकरण निश्चित है। जब श्राद्धकर्ता अपने पूर्वजों को तिल अर्पित करता है तो इसका अर्थ है कि वह पूर्वजों से सभी इच्छाएं, तृष्णा और बंधन को त्याग कर अग्रसर होने का निवेदन करता है। यही तो परमधाम की यात्रा है। जिसे मोक्ष प्राप्ति भी कहा गया है।

श्रीमद् भागवत कथा

26 सितम्बर से
2 अक्टूबर 2026
सत्संग चैनल

3 से 10
अक्टूबर 2026
संस्कार चैनल

समय : सायं 4:00 बजे से
7:00 बजे तक

श्राद्ध तिथि तर्पण
5,100 रु.

श्राद्ध तिथि तर्पण व
ब्राह्मण भोजन सेवा
11,000 रु.

सप्तदिवसीय भागवत मूलपाठ
श्राद्ध तिथि तर्पण व
ब्राह्मण भोजन सेवा
21,000 रु.

गया में 'श्राद्ध' की महिमा

मृत्यु के बाद मानव मात्र का तरण–तारण जिन तीन विधानों से होता है, वह हैं–श्राद्ध, पिंडदान और तर्पण। यूँ तो भारत में अनेक तीर्थों पर श्राद्ध–पिंडदान के विधान सम्पन्न होते हैं, लेकिन पुराणों के अनुसार श्राद्ध–पिंडदान के लिए सर्वाधिक पवित्र स्थान बिहार की राजधानी पटना से करीब 100 किमी दूर पावन फल्गु नदी के तट पर बसा गयाधाम है। पुराणों के अनुसार यहाँ पिंडदान से व्यक्ति पितृ ऋण से मुक्त हो जाता है। पितृपक्ष में समस्त ज्ञात–अज्ञात पितर अपने–अपने परिजनों, खासकर पुत्रादि से अन्न–जल की आशा में गया में फल्गु के तट पर आ विराजते हैं और परिवार को परम आशीर्वाद प्रदान करते हैं। पिंडदान के बाद निकट ही 'विष्णुपद' और 'अक्षयवट' की पूजा को भी आवश्यक मान गया है। गरुड़ पुराण में कहा गया है कि पृथ्वी के सभी तीर्थों में गया सर्वोत्तम है, तो वायु पुराण में वर्णित है कि गया का कोई स्थल ऐसा नहीं, जो तीर्थरूप न हो। मत्स्य पुराण में इसे 'पितृ तीर्थ' कहा गया है। ▪▪▪

अपने स्वर्गीय परिजनों का श्राद्ध एवं तर्पण गयाजी के पावन धाम में कराएँ और पितृकृपा, सुख एवं समृद्धि का आशीर्वाद पाएं।

सम्पर्क-
0294-6622222

भागवत प्रवक्ता:
पूज्य डॉ. संजय कृष्ण सलिल जी महाराज

जीवन की कहानी

नारायण लिंब से कान्हा को लगे पंख

प्यारा सा मासूम कान्हा। जन्म से ही जिंदगी से जंग की नियती लेकर दुनिया में आया। नौ वर्षीय कान्हा का दायां पैर पंजे से, बायां पैर घुटने से और बायां हाथ कोहनी विहीन है। बचपन से ही ठीक से चलना –फिरना उसके नसीब में नहीं था।

जैसे–जैसे उम्र बढ़ी, दूसरे बच्चों की तरह खेलने, दौड़ने और मस्ती करने को उसका मन भी मचल उठता। तभी अपनी विवशता पर उसकी आंखें भर आतीं। बेटे की यह बेबसी देखकर अलीगढ़, उप्र निवासी माता–पिता का दिल भी हर रोज किरच–किरच टूटता था, मगर वे भी कुदरत के आगे मजबूर थे।

एक दिन किसी ने उन्हें नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया और वहां जाने की सलाह दी। उम्मीद की एक नई

हौसले बुलंद हो तो कोई भी मंजिल दूर नहीं होती। कान्हा आज न केवल चल रहा है, बल्कि खेल के मैदान में अपने सपनों को भी पंख दे रहा है। उसकी मुस्कान ही हमारी सबसे बड़ी सफलता है।

किरण के साथ जून 2026 के प्रथम सप्ताह में वे कान्हा को संस्थान लेकर आए। यहां विशेषज्ञ चिकित्सकों व पीएंडओ ने उसका परीक्षण किया और उसके लिए विशेष 'नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब' बनाए।

कान्हा उन्हें पहनकर अब अपने पैरों पर खड़ा हो पाता है, आत्मविश्वास के साथ चल–फिरता है और उसके चेहरे पर उदासी की जगह चमक और मुस्कान है। उसके माता–पिता का कहना है कि जो बच्चा कभी दूसरों को खेलते देखकर उदास हो जाता था, आज वह भी खेल मैदान की ओर कदम बढ़ा रहा है। नारायण सेवा संस्थान ने केवल उसे कृत्रिम अंग ही नहीं दिए, बल्कि उसके जीवन में उम्मीद, आत्मविश्वास और नई उड़ान भी भर दी है। जिसके लिए हम संस्थान और उसके सेवाभावी चिकित्सकों के आजीवन ऋणी रहेंगे। ▪▪▪

सेवा से संवेदना
संवेदना से परिवर्तन

वरदान से कम नहीं नारायण लिंब : अशोक

बिहार के मुंगेर निवासी अशोक कुमार दिहाड़ी मजदूरी कर परिवार का पोषण करते थे। रोजाना की मेहनत ही उनकी पूंजी थी और उसी के सहारे वे परिवार की जरूरतें पूरी कर रहे। कुछ माह पूर्व एक गंभीर बीमारी ने उनकी जिंदगी को चिंताजनक हालातों में धकेल दिया। एक ऐसी बीमारी ने उन्हें जकड़ लिया जिससे उनका बांया पैर धीरे–धीरे काला पड़ने लगा। इलाज के लिए एम्स पटना गए, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद पैर में संक्रमण को अत्यधिक गंभीर पाया। डॉक्टरों ने उन्हें घुटने से नीचे तक जान बचाने के लिए पैर के हिस्से को काटना ही एक मात्रा विकल्प बताया। पैर कटने के साथ ही अशोक से रोजगार भी छिन गया। मजदूरी करना अब संभव नहीं रहा। परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो गया। घर–खर्च चलाना मुश्किल था। इन हालातों में अशोक मानसिक रूप से टूट रहे थे। उन्हें लगने लगा कि अब वे पैरों पर खड़े नहीं हो पाएंगे और न ही पहले की तरह परिवार का सहारा बन सकेंगे।

इसी कठिन दौर में उन्हें उदयपुर स्थित नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी मिली। टूटती उम्मीद को सहारे की तलाश में वे संस्थान पहुंचे, जहां विशेषज्ञ चिकित्सकों ने उनका परीक्षण किया। इसके बाद उनके लिए जापान एवं जर्मन तकनीक से निर्मित अत्याधुनिक 3डी प्रिंटेड नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब बनाकर निःशुल्क प्रदान किया गया। कृत्रिम पैर लगाने के बाद आवश्यक प्रशिक्षण और अभ्यास से अशोक ने दोबारा चलना शुरू किया। यह उनके और परिवार के लिए किसी चमत्कार से कम न था। अब वे बिना किसी सहारे के चल–फिर लेते हैं, अपने अधिकांश दैनिक कार्य स्वयं करने में सक्षम हैं और आत्मविश्वास के साथ नई शुरुआत कर चुके हैं। उनके चेहरे पर लौटी मुस्कान इस बात का प्रमाण है कि समय पर मिला सहयोग किसी का जीवन पूरी तरह बदल सकता है।

अशोक यह कहते हुए फफक पड़े कि पैर काटा तब लगा कि जिंदगी ही रुक गई है। परिवार का क्या होगा? लेकिन नारायण सेवा संस्थान और दानवीर भामाशाहों के सहयोग से मुझे फिर से अपने पैरों पर खड़ा होने का सौभाग्य मिला। नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

मैं उन सभी सेवाभावी दानदाताओं का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी उदारता ने मुझे नया जीवन और नई उम्मीद दी।

रानी के जीवन में उम्मीदों का सूर्योदय

बिहार के मुजफ्फरपुर की 25 वर्षीय रानी का जीवन एक दर्दनाक हादसे के बाद पूरी तरह बदल गया था। जब वह मात्र 15 वर्ष की थीं, तब घर की छत पर कच्ची दीवार का सहारा लेकर खड़ी थीं। अचानक दीवार भरभराकर गिर गई और रानी भी छत से नीचे जा गिरीं। इस दुर्घटना में उनके बाएं पैर पर भारी पत्थर गिरने से वह बुरी तरह घायल हो गई ।

परिजनों ने उन्हें अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने पैर को बचाने की हर संभव कोशिश की, लेकिन गंभीर चोट और संक्रमण के कारण अंततः उनका पैर काटना पड़ा। एक पैर खोने के साथ ही रानी के सपने भी मानो थम गए। चलना–फिरना मुश्किल हो गया, पढ़ाई बीच में ही छूट गई और हर छोटे काम के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था। वॉकर के सहारे चलने वाली रानी के लिए जीवन संघर्षों से भर गया।

जून 2026 में सोशल मीडिया के माध्यम से उन्हें नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी मिली। परिजनों के साथ संस्थान पहुंचने पर विशेषज्ञों ने उनका परीक्षण किया और जापानी एवं जर्मन तकनीक से निर्मित '3–डी प्रिंटेड नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब' के लिए उनका माप लिया। कुछ समय बाद जब उन्हें कृत्रिम पैर लगाया गया, तो उनकी जिंदगी फिर से मुस्कुरा उठी।

आज रानी अपने पैरों पर आत्मविश्वास के साथ खड़ी हैं। वह बिना किसी सहारे के आसानी से चल–फिर सकती हैं, अपने दैनिक कार्य स्वयं करती हैं और नई शुरुआत के साथ अपने भविष्य को सुनिश्चित करने की ओर बढ़ रही हैं। **वे कहती हैं, मुझे लगा था कि जिंदगी बस! यहीं रुक गई, लेकिन नारायण सेवा संस्थान ने मुझे फिर से गतिमान बनाकर जीने का मकसद भी दे दिया।**

नि:स्वार्थ सेवा का नयनाभिराम संसार

Ramesh Jayaraman
Head of Product Owners, India
ACI Worldwide Solutions
Private Limited

We would like to take a moment to sincerely appreciate the incredible work being carried out by Narayan Seva Sansthan in serving humanity with compassion and dedication. A wonderful uplifting and truly inspiring camp was recently organized by Narayan Seva Sansthan, highlighting their unwavering commitment to service, compassion, and the empowerment of differently abled individuals. Camp provided free limbs, crutches, and calipers to the individuals and atmosphere was filled with love, gratitude, and hope. The joy on the faces of the people was overwhelming.

At ACI Worldwide, we are proud to be associated with such a noble cause. Our collaboration with Narayan Seva Sansthan has been a meaningful journey, and it is heartening to see how our combined efforts are contributing to transforming lives and bringing smiles to so many families. This event and service by Narayan Seva Sansthan reminds us of how collective efforts can brighten the lives of many, proving that love in action can break down all barriers.

The spirit of service demonstrated by the teams reinforces the true essence of humanity serving others selflessly and creating lasting change in society.

We look forward to continuing this partnership and supporting such impactful initiatives in the future.

Jitender Bhatti
Deputy Director
Institute of Secretariat Training
and Management, New Delhi

The visit gave a great experience of the work being done by Narayan Seva Sansthan for the betterment of mankind. Wishing them all the best.

श्री राहुल नितिन सिन्नारकर
कंपनी सचिव
ईस्टमैन ऑटो एण्ड पॉवर

ईस्टमैन में, हम हमेशा से मानते आए हैं कि जिम्मेदार व्यवसाय का दायरा सिर्फ बोर्डरूम तक सीमित नहीं है यह उन समुदायों में व्याप्त है जिनकी हम सेवा करते हैं। नारायण सेवा संस्थान के साथ हमारा जुड़ाव हमारे सीएसआर (कॉर्पोरेट सोशल रिसोर्स) दायित्व को उद्देश्यपूर्ण और सटीक रूप से आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण रहा है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि निवेश किया गया प्रत्येक रुपया समाज के सबसे जरूरतमंद वर्गों के लिए वास्तविक और ठोस बदलाव लाए। इस साझेदारी की विशेषता नारायण सेवा संस्थान का विश्वास, पारदर्शिता और जमीनी स्तर पर पहुँच है जो हमारे प्रयासों को दिशा और गहराई प्रदान करती है। हमें खुशी है कि हमें एक ऐसा साझेदार मिला है जिसके मूल्य हमारे मूल्यों से इतने मेल खाते हैं और हम आशा करते हैं कि यह सहयोग उद्योग में दूसरों को भी आगे बढ़कर योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा।

परमार्थ का मार्ग ही कल्याणकारी : मानव जी

नारायण सेवा संस्थान के लियों का गुड़ा स्थित सेवा महातीर्थ में 29 जुलाई को गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संस्थापक पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी 'मानव' के पाद–प्रक्षालन के बाद गुरुमाता श्रीमती कमला देवी जी, अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया जी, निदेशक श्रीमती वंदना जी, निदेशक श्रीमती पलक जी, ट्रस्टी श्री जगदीश जी आर्य एवं ट्रस्टी श्री देवेंद्र जी चौबीसा ने उनका अभिनंदन किया। देशभर से आए सहयोगी शाखाओं के प्रभारी, साधक–साधिकाएं और श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का 'आस्था' चैनल पर सीधा प्रसारण भी हुआ।

अपने आशीर्वचन में पूज्य गुरुदेव ने गायत्री शक्तिपीठ के संस्थापक स्व. आचार्य श्रीराम शर्मा को नमन करते हुए कहा कि मनुष्य जन्म अनेक पुण्यों का फल है। प्रत्येक व्यक्ति को सेवा, परोपकार, दया, करुणा, क्षमा, विनम्रता और आत्मसंयम के मार्ग पर चलते हुए ऋषि–मुनियों एवं गुरुओं के उपदेशों को जीवन में अपनाना चाहिए। इससे पूर्व भगवान श्री गणेश एवं भगवान वेदव्यास का पूजन किया गया। विभिन्न राज्यों से आए श्रद्धालुओं एवं सहयोगियों ने पूज्य गुरुदेव का वंदन कर शुभकामनाएं अर्पित कीं।

गुरुमाता श्रीमती कमला देवी जी ने कहा कि पूज्य मानवजी द्वारा स्थापित नारायण सेवा संस्थान केवल एक संस्था नहीं, बल्कि प्रेम, करुणा, सेवा और मानवता का विश्वव्यापी अभियान है। श्रीमती वंदना जी ने गुरुदेव के मार्गदर्शन में संस्थान की 40 वर्षीय सेवायात्रा का उल्लेख करते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना की। श्रीमती पलक जी ने कहा कि पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन को दिव्यांगों और निराश्रितों की सेवा–साधना के लिए समर्पित किया। ट्रस्टी श्री जगदीश जी आर्य ने गुरु को जीवन का पथप्रदर्शक बताया, जबकि ट्रस्टी श्री देवेंद्र जी चौबीसा ने कहा कि गुरुदेव ने लाखों दिव्यांगों को चिकित्सा एवं पुनर्वास के माध्यम से आत्मसम्मान के साथ जीने का अवसर दिया। कार्यक्रम का संयोजन श्री महिम जैन ने किया।

कृतज्ञता का उत्सव :भैया जी

पूज्य गुरुदेव के प्रखर शिष्य एवं संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया ने कहा कि गुरु पूर्णिमा भारत की आत्मा का उत्सव है। गुरु मनुष्य के भीतर सुप्त दिव्यता को जागृत कर सत्य, सेवा और सदाचार का मार्ग दिखाता है। उन्होंने कहा कि भगवान दत्तात्रेय ने 24 गुरुओं से जीवन की अमूल्य सीख ग्रहण की। मेरे जीवन में ईश्वर की कृपा रही कि गुरु की खोज बाहर नहीं करनी पड़ी। मेरे पूज्य पिताजी ही मेरे गुरुरूप में सहज प्राप्त हुए। उन्होंने सिखाया कि मनुष्य की सबसे बड़ी पहचान उसका पद नहीं, बल्कि सेवा के प्रति उसका समर्पण है। गुरुदेव की यही शिक्षा मेरे जीवन की अमूल्य पूंजी है और उसी सेवा-पथ पर चलना मेरा संकल्प है।

अहमदाबाद में उमड़ी उम्मीद

327 से अधिक दिव्यांगजन के लिए 3डी प्रिंटेड नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब का लिया माप

नारायण सेवा संस्थान एवं सीएसआर पार्टनर इंगरसोल रैंड के संयुक्त तत्वावधान में 26 जुलाई को गुजरात यूनिवर्सिटी, नवरंगपुरा में विशाल निःशुल्क दिव्यांग शल्य चिकित्सा जांच, चयन तथा जापान–जर्मन तकनीक से निर्मित 3डी प्रिंटेड नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब मेजरमेंट शिविर आयोजित किया गया। जिसमें 450 से अधिक दिव्यांगजनों की सेवा हुई। विशेषज्ञ चिकित्सकों एवं पी एंड ओ टीम ने 327 दिव्यांगजनों के नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब (कृत्रिम हाथ–पैर) के लिए माप लिए।

शिविर का शुभारंभ समाजसेवी श्रीमती रमिला बेन टी. पटेल, श्री जोगेंद्र प्रताप सिंह, श्री वल्लभ भाई धनानी, श्री चन्द्रकांत भाई पटेल, श्री किरीट भाई शाह, श्रीमती पुष्पा बेन राठौड़, श्री आशुतोष भाई पंडित, श्री विवेक पटेल, श्रीमती शीतल पटेल एवं श्री जगदीश चेचानी सहित अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर श्रीमती रमिला बेन ने कहा कि दिव्यांगजनों की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। नारायण सेवा संस्थान वर्षों से दिव्यांगों के समग्र विकास और आत्मनिर्भरता के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रहा है। ऐसे सेवा कार्यों को समाज का निरंतर सहयोग मिलना चाहिए।

संस्थान के संरक्षक एवं मुंबई शाखा अध्यक्ष श्री महेश जी अग्रवाल ने दिव्यांगजन से कहा कि जीवन में कभी हार न मानें और आत्मविश्वास बनाए रखें। अतिथियों ने शिविर अवलोकन में दिव्यांगजनों से संवाद किया तथा चिकित्सकों से उपचार एवं पुनर्वास की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की।

जनसंपर्क प्रमुख श्री भगवान प्रसाद गौड़, शिविर प्रभारी श्री हरि प्रसाद लड्ढा, सूरत आश्रम प्रभारी श्री अचल सिंह भाटी एवं अहमदाबाद आश्रम प्रभारी श्री कैलाश चौधरी ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया। शिविर में 450 से अधिक दिव्यांगजनों का पंजीकरण हुआ। विशेषज्ञ चिकित्सकों एवं पी एंडओ टीम ने सभी का परीक्षण कर 327 दिव्यांगजनों के नारायण मॉड्यूलर

सक्सेस स्टोरी

नारायण लिंब से फिर जीतेगी

अंजली सोना

साल 2018 में बारहवीं की परीक्षा देकर घर लौट रही अंजली अहमदाबाद के चंदोडिया क्षेत्र में रेलवे ट्रैक पार करते समय अचानक चक्कर आने से पटरी पर गिर गई। सामने से आती ट्रेन ने घुटनों के नीचे से उसके दोनों पैर काट दिए। अस्पताल में करीब डेढ़ वर्ष तक इलाज चला और गंभीर संक्रमण के कारण पाँच ऑपरेशन करने पड़े। इसके बाद उसकी दुनिया व्हीलचेयर तक सिमट गई, लेकिन उसने हार नहीं मानी। अंजली ने बारहवीं के बाद एम.कॉम. की पढ़ाई पूरी की। साधारण परिवार से आने वाली 25 वर्षीय अंजली के पिता हेयर कटिंग करते हैं और माँ गृहिणी हैं। सीमित संसाधनों के बावजूद परिवार ने उसका हौसला बनाए रखा।

वर्ष 2022 में दिव्यांगता दिवस पर उसने द कपिल शर्मा शो में अपने नृत्य से सबका दिल जीता। इसके बाद उसने तलवारबाजी को अपना लक्ष्य बनाया और राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में दो कांस्य पदक तथा खेल महाकुंभ में लगातार तीन स्वर्ण पदक जीतकर साबित किया कि जीत हौसलों से मिलती है। आधुनिक 3डी प्रिंटेड नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिंब की जानकारी मिलने पर अंजली ने 26 जुलाई को नारायण सेवा संस्थान के अहमदाबाद शिविर में अपने कृत्रिम पैरों का माप दिया। अब वह अत्याधुनिक कृत्रिम पैरों के सहारे अपने सपनों को नई उड़ान देगी और हजारों दिव्यांगों के लिए प्रेरणा बनेगी।

अंजली कहती है, मैं चाहती हूँ कि लोग मेरी दिव्यांगता नहीं, मेरी उपलब्धियों को देखें। मेरा लक्ष्य देश के लिए स्वर्ण पदक जीतना और हर दिव्यांग में यह विश्वास जगाना है कि जीवन किसी दुर्घटना से नहीं रुकता।

संस्थान ने उसे आधुनिक कृत्रिम पैर उपलब्ध कराने के साथ हर संभव सहयोग का भरोसा दिया है। विश्वास है कि इन नए कदमों के साथ अंजली की रफ्तार और बढ़ेगी तथा उसका अगला स्वर्ण पदक उसकी अदम्य इच्छाशक्ति का प्रतीक बनेगा। ▪▪▪

आर्टिफिशियल लिम्ब एवं कैलिपर्स के लिए माप लिए गए तथा 23 दिव्यांगजनों का निःशुल्क शल्य चिकित्सा के लिए चयन किया गया। जिन दिव्यांगजनों का माप लिया गया, उन्हें लगभग दो माह बाद अहमदाबाद में ही आयोजित शिविर में उच्च गुणवत्ता वाले नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब निःशुल्क पहनाए जाएंगे। जरूरतमंद 10 दिव्यांगजन को अतिथियों ने व्हीलचेयर प्रदान की। संयोजन महिम जैन ने किया। ▪▪▪

दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह 2026

श्रद्धेय मातृशक्ति एवं पूज्य सज्जनों!

राम-राम.. सादर प्रणाम

सनातन संस्कृति में 16 संस्कारों का अत्यंत पवित्र स्थान है। इन्हीं संस्कारों के माध्यम से मानव जीवन को दिशा, मर्यादा और उद्देश्य प्राप्त होता है। इन संस्कारों में विवाह केवल एक सामाजिक परंपरा नहीं, बल्कि जीवन भर निभाए जाने वाले कर्तव्यों और प्रेम की दिव्य प्रतिज्ञा है।

'विवाह' शब्द स्वयं बताता है - 'वि' अर्थात विशेष और 'वाह' अर्थात वहन करना - यानी जीवन की विशेष जिम्मेदारियों को हृदय से स्वीकार करना। विवाह वह शुभ घड़ी है, जहाँ दो आत्माएँ सात फेरों के साथ सात जन्मों तक साथ निभाने का संकल्प लेती हैं। वैदिक परंपरा में यह रिश्ता केवल बंधन नहीं, बल्कि त्याग, समर्पण और विश्वास की पवित्र डोर है। इसी पावन भावना को साकार करते हुए, **आपका अपना नारायण सेवा संस्थान दिनांक 19-20 सितम्बर 2026 को 47 वां 'दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह'** का आयोजन उदयपुर में करने जा रहा है। जिसमें दिव्यांग एवं निर्धन भाई-बहनों का विवाह वैदिक रीति-रिवाजों से सम्पन्न कराया जाएगा।

इस भव्य आयोजन में गणपति पूजन, हल्दी, मेहंदी, संगीत, बिन्दोली और पवित्र अग्नि के समक्ष सात फेरे जैसी सभी संस्कारिक रस्में पूरी श्रद्धा और गरिमा के साथ संपन्न होंगी। यह केवल विवाह नहीं, बल्कि दिव्यांग बेटियों के सूने आँगन में खुशियों की रोशनी भरने का अवसर है तथा गरीब बेटों के जीवन को सम्मान और संबल देने का माध्यम है। यह समारोह मानव सेवा, संस्कार और परमार्थ का त्रिवेणी संगम है।

आपका छोटा सा योगदान इन जोड़ों के अधूरे सपनों को पूर्ण कर सकता है, उनके जीवन में नई शुरुआत की रोशनी ला सकता है। आइए, इस पुण्य कार्य के साक्षी बनें...आपकी उपस्थिति ही हमारा सबसे बड़ा आशीर्वाद होगा।

निवेदक

कैलाश 'मानव' पद्मश्री अलंकृत
संस्थापक चेयरमैन

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष

आपश्री सादर आमंत्रित हैं

दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह 2026

मांगलिक कार्यक्रम

दिनांक: शनिवार, 19 सितम्बर 2026

गणपति स्थापना
प्रातः 10.15 बजे से

हल्दी रस्म
प्रातः 11.00 बजे से

मेहंदी रस्म
प्रातः 11.40 बजे से

कन्या दानी सम्मान
प्रातः 11.50 बजे से

महिला संगीत
सांयः 7.00 बजे से

दिनांक: रविवार, 20 सितम्बर 2026

बिन्दोली
प्रातः 10.00 बजे से

तोरण
प्रातः 11:00 बजे से

वरमाला
दोपहर 12:15 बजे से

पाणिग्रहण संस्कार
दोपहरः 12:45 बजे से

विदाई
दोपहर 1:15 बजे से

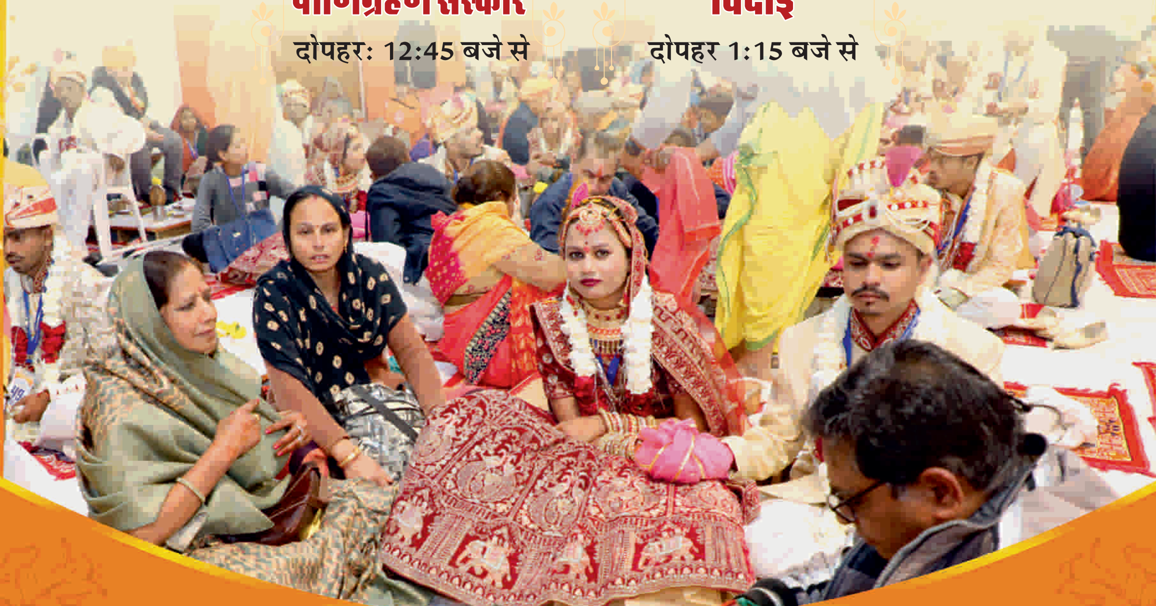

बनें सेवा के साक्षी

जीते जी सेवा को समर्पित

WOH का चौथा माला

18 साल पहले पत्नी की स्मृति में अस्पताल

कुछ रिश्ते समय के साथ धुंधले नहीं होते, बल्कि सेवा के रूप में और गहरे उतरते जाते हैं। नारायण सेवा संस्थान के सम्मानित दानी एवं संरक्षक श्री जसवंत लाल गिरधर लाल शाह टुवावाला, मुंबई (जन्म 24 नवंबर 1933) की 15 जुलाई की उदयपुर यात्रा ऐसी ही भावनाओं से भरी रही।

परिवार सहित उदयपुर पहुंचे शाह परिवार की संस्थान संस्थापक चेयरमैन कैलाश मानव, अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल, सह संस्थापिका कमला देवी अग्रवाल, निदेशक वंदना अग्रवाल, निदेशक पलक अग्रवाल एवं मुंबई प्रभारी ललित लोहार ने अगवानी की। संस्थान की ओर से शाह परिवार का मेवाड़ी परंपरा से अभिनंदन कर उनके सेवाभाव के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

जसवंत भाई शाह ने संस्थान के सेवा महातीर्थ परिसर का भ्रमण किया। करीब 18 वर्ष पूर्व उन्होंने अपनी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्रीमती इंदुमती शाह टुवावाला, मुंबई की स्मृति में अस्पताल का निर्माण करवाकर उसे दिव्यांगजनों की सेवा के लिए संस्थान को समर्पित किया था।

आज स्व. इंदुमती शाह जसवंत लाल शाह सेवा हॉस्पिटल जरूरतमंद दिव्यांगजनों के लिए आशा और उपचार का केंद्र बना हुआ है। अस्पताल पहुंचकर उन्होंने पत्नी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और उपचाररत रोगियों से मुलाकात कर उनकी कुशलक्षेम जानी। वर्षों पुरानी स्मृतियों के बीच यह पल भावुक कर देने वाला रहा। पत्नी के प्रति प्रेम को उन्होंने स्मारक तक सीमित न रखकर सेवा का माध्यम बनाया, जो आज भी अनगिनत जीवनों को संबल दे रहा है।

इसके बाद जसवंत भाई शाह वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी पहुंचे। यहां उन्होंने अपने नाम 'जसवंत लाल गिरधर लाल शाह टुवावाला, मुंबई' से निर्मित चौथे माले का सौजन्य रोगियों की सेवा के लिए समर्पित किया और फीता काटकर लोकार्पण किया।

इस अवसर पर उनके साथ बेटे एवं बहुएं सिद्धार्थ शाह, बीना शाह, विक्रम शाह, वंदना शाह, श्रेणिक शाह, पूनम शाह, बेटी जयश्री बेन तलसानिया और दामाद सुधीर तलसानिया मौजूद रहे।

शाह परिवार की यह यात्रा केवल संस्थान का दौरा नहीं थी, बल्कि स्मृति से सेवा और सेवा से समर्पण तक की एक भावपूर्ण यात्रा रही। पत्नी की याद में 18 वर्ष पहले शुरू हुआ सेवायज्ञ आज उनके नाम से आगे बढ़ा। यह संदेश भी छोड़ गया कि सच्चा प्रेम समय के साथ समाप्त नहीं होता, वह परोपकार बनकर समाज में जीवित रहता है।

सेवा की संवेदना से रूबरू हुए

केंद्रीय सचिवालय के 34 प्रशिक्षु अधिकारी

केंद्र सरकार के कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के अधीन इंस्टीट्यूट ऑफ सेक्रेटेरिएट ट्रेनिंग एंड मैनेजमेंट (ISTM) के लेवल–IV प्रशिक्षण कार्यक्रम के 34 प्रशिक्षु अधिकारियों ने डिप्टी डायरेक्टर श्री जितेंद्र भट्टी के नेतृत्व में 20 जुलाई को नारायण सेवा संस्थान का भ्रमण किया। अधिकारियों ने संस्थान की सेवा गतिविधियों को करीब से समझने के साथ दिव्यांग लाभार्थियों और उपचाररत रोगियों से मुलाकात की। लाभार्थियों ने अधिकारियों से अपने जीवन के संघर्ष और संस्थान से मिली मदद के अनुभव साझा किए। किसी ने बताया कि इलाज के बाद उसे नई जिंदगी मिली, तो किसी ने कृत्रिम अंग के सहारे फिर से अपने पैरों पर खड़े होने की कहानी सुनाई। इन अनुभवों ने अधिकारियों को भावुक कर दिया। उनके लिए यह भ्रमण केवल एक अध्ययन यात्रा नहीं, बल्कि मानवीय पीड़ा, संघर्ष और

सेवा का वास्तविक अर्थ तब समझ आता है, जब हम किसी जरूरतमंद की आंखों में उम्मीद लौटते देखते हैं–वंदना अग्रवाल, निदेशक

आत्मसम्मान को करीब से महसूस करने का अवसर बन गया। संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल ने अधिकारियों को नारायण सेवा संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी। **प्रशिक्षु अधिकारियों ने संस्थान की सेवाओं की सराहना की और कहा कि इस अनुभव ने उन्हें समाज के वंचित वर्गों के प्रति अधिक संवेदनशील बनने की प्रेरणा दी। केंद्रीय सचिवालय के अधिकारियों को प्रशिक्षण के साथ सेवा संस्थानों का प्रत्यक्ष अनुभव कराकर संवेदनशील बनाने की सरकार की यह पहल निश्चित रूप से प्रेरणादायी है। यह प्रयास प्रशासन को केवल व्यवस्था चलाने वाला नहीं, बल्कि समाज की पीड़ा को समझने वाला मानवीय चेहरा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।**

पीठ, त्वचा व पैरों के दर्द से राहत

अहमदाबाद के दंपति ने साझा किए स्वास्थ्य लाभ के अनुभव

अहमदाबाद निवासी लवनीश शर्मा और उनकी धर्मपत्नी शिखा शर्मा ने संस्थान के महावीर नारायण प्राकृतिक चिकित्सालय में उपचार के बाद बताया कि 10 दिनों के उपचार से उन्हें वर्षों से चली आ रही स्वास्थ्य समस्याओं में चमत्कारीय राहत मिली है। लवनीश जी ने बताया कि वे पिछले छह माह से पीठ दर्द और त्वचा संबंधी समस्या से परेशान थे। प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में स्टीम बाथ, चिकित्सीय मसाज, मिट्टी पट्टी, हाइड्रोथेरेपी, संतुलित आहार और योग के माध्यम से उपचार प्राप्त करने के बाद उनकी पीठ के दर्द में काफी कमी आई तथा त्वचा संबंधी समस्या में भी सुधार हुआ। अब वे स्वयं को पहले की अपेक्षा अधिक स्वस्थ और ऊर्जावान महसूस कर रहे हैं। शिखा जी ने बताया कि लंबे समय से पैरों में दर्द के कारण चलने में कठिनाई होती थी। उपचार के बाद समस्या काफी कम हो गई। अब वे सामान्य रूप से अपना दैनन्दिन कार्य भी कर पा रही हैं। दंपति ने प्राकृतिक चिकित्सा को सुरक्षित, प्रभावी एवं प्रकृति आधारित उपचार पद्धति बताते हुए कहा कि यह बिना दुष्प्रभाव के शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने संस्थान की उत्कृष्ट चिकित्सा सुविधाओं के लिए आभार व्यक्त किया।

नन्हे हाथों ने रोपे पौधे, धरती के नाम लिखी

हरियाली की इबारत

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर नारायण सेवा संस्थान द्वारा संचालित नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों ने 28 जुलाई को पौधारोपण कर प्रकृति के प्रति प्रेम और जिम्मेदारी का सुंदर परिचय दिया। विद्यालय परिसर में बच्चों ने विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे और उन्हें अपने परिवार के सदस्य की तरह सहेजने का संकल्प लिया।

पौधा लगाते समय बच्चों के चेहरों पर उमंग थी और आंखों में एक हरे–भरे भविष्य का सपना। उन्हें बताया गया कि वृक्ष केवल धरती का श्रृंगार नहीं, बल्कि जीवन की सांस हैं। वे हमें शुद्ध वायु देते हैं, जल का संरक्षण करते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए धरती को रहने योग्य बनाए रखते हैं। बच्चों ने संकल्प लिया कि वे केवल पौधे लगाकर अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करेंगे, बल्कि उनकी नियमित देखभाल भी करेंगे। इस दौरान प्रकृति संरक्षण, वृक्षों के महत्व और पर्यावरण संतुलन में पेड़–पौधों की भूमिका पर भी बच्चों को जागरूक किया गया।

विद्यालय परिसर में हुआ यह छोटा–सा प्रयास अपने भीतर बड़ा संदेश समेटे थाकृजिस धरती ने हमें जीवन दिया है, उसकी सांसों को बचाना भी हमारा धर्म है। नन्हें हाथों से रोपा गया प्रत्येक पौधा मानो आने वाले कल के नाम एक बड़ा संदेश था।

नारायण सेवा संस्थान सेवा के साथ सामाजिक और पर्यावरणीय दायित्वों के निर्वहन के लिए भी निरंतर प्रयासरत है। यह अभियान बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम, संवेदनशीलता और सेवा के संस्कारों को मजबूत करने वाली प्रेरणादायी पहल बना।

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कान्तिलाल मूथा,
मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
मो. 09829769960
C/á नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा–311001

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी
मो. 09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला, मो. 8952859514, लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा
मो. 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल, 35 लादिया, बाग अलवर

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,
मो. 09828242497
5–C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़, झोटवाड़ा, जयपुर 302012

अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,
मो. 09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,
मो. 09829960811,
ए. 14, 'गिरधर–धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी, चित्तौड़ रोड़, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन
मो.–09113733141
ब्व पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली, हजारीबाग

रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़

धनबाद
श्री गोपाल कुमार खेडिया,
मो. 09608529923,
आजाद नगर भूलीनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 09752492233,
मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम

जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,
मो. 09926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन सिटी, माढ़ोताल, जिला – जबलपुर

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136
ए–3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलॉं, होशंगाबाद रोड़ जिला – भोपाल

बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,
मो. 08989609714, बखतगढ़, त.–बदनावर, जि.–धार

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी,
मो. 09422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला

परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा
मो. 09422876343

नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड,
मो. 07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम, मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला – नांदेड़

पाचोरा
श्री सीताराम जी
मो. 09422775375

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी
मो. 028847991, 9029643708, 10–बीब्बी, वाईसराय पार्क, ठाकुर विलेज कान्दीवली, मुम्बई

भायंदर
श्री कमलचंद लोढा,
मो. 8080083655 ए/103, 'देव आंगन' जैन मन्दिर रोड़ बावन जिनालय मन्दिर के पास, भायंदर (पश्चिम) ठाणे–401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,
मो. 09418419030
गॉंव व पोस्ट–बिघरी, त. बदसर जिला हमीरपुर – 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया मो. 09418061161, जामलीधाम, पोस्ट–रोपा, जिला–हमीरपुर–177001

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807
गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

....

श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662
3 68–ए, नई अनाज मंडी, कैथल

जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878
108 अनाज मण्डी, जुलाना, जींद

पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो. 09991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर–14, पलवल

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
ओपीपी. गली नंबर 19, गोविंद डेयरी मेन रोड करण विहार नियर मेरठ रोड करनाल 132001

अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
मकान नं.– 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केन्ट–133001

नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014 165–हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नरवाना, जीन्द

गोवा

गोवा
श्री अमृत लाल दोषी,
मो. 07798917888
'दोषी निवास' जैन मन्दिर के पास, पजीफोन्ड, मडगांव गोवा–403601

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,
मो. 09274595349
म.नं.रू बी–77, गोल्डन बंग्लो, नाना चिलोड़ा, अहमदाबाद

दानवीर भामाशाह

स्वर्गीय श्री केदारमल जी अग्रवाल एवं स्वर्गीय श्रीमती मीरा बाई जी अग्रवाल, हैदराबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074
विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई) जिला–बरेली
श्री विजय नारायण शुक्ला मो. 7060909449,
मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरेली

हाथरस
श्री दास बृजेन्द्र,
मो.–09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन, सादाबाद

हापुड़
श्री मनोज कंसल
मो.–09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस, कबाड़ी बाजार, हापुड़

गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो.–08791269705 बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट, गजरौला, अमरोहा–244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल
मो. 09425536801

....

श्री देवनाथ साहू
मो. 09229429407
गांव– बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला–कोरबा

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,
मो.–09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर

बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000
रामदेव चौक बालोद जिला–बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,
मो. 09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52–सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मु–180001

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा
मो. 08447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा
मो.0 9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास, शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई
मो. 09529920090,07073452174
09529920088
शिवे सृष्टि सीएचएस लिमिटेड, बिल्डिंग नं. 4–बी, फ्लैट नंबर 608, बॉम्बे डाईंग महादा बोइवाड़ा, नयागांव, दादर (पूर्व) मुंबई (महाराष्ट्र) पिनकोड 400014

पूणे
मो. 09529920093
17/153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट गोखले नगर, पूणे–16

दिल्ली

रोहिणी
मो. 08588835718
08588835719, बी–4/67, सेक्टर–8, रोहिणी, दिल्ली, पिन कोड 110085

जनकपुरी, नई दिल्ली
07023101167, 07412060406
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058

विकासपुरी, नई दिल्ली
मो. 09257017592
मकान नं. 342 ब्लॉक–सी, मद्रासी मन्दिर के पास विकासपुरी 110018

वेस्ट बंगाल

कोलकाता
09529920097, मकान नंबर–580, स्वामी सारणी ग्वाला, बागान, कालांदी, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) पिनकोड 700048

हरियाणा

गुरूग्राम
मो. 08306004802,
हाउस नं.–1936 जीए, गली नं.–10, राजीव नगर ईस्ट, माता रोड़, सी. आर.पी.एफ. केम्प चौक, गुरुग्राम – 122001

हिसार
मो. 9257017593, मकान न. 2249, सेक्टर–14, हिसार 125005

रेवाड़ी
मो. 9257017594, C/o श्री ललित कुमार, गली नंबर 7, दूसरी मंजिल, विकास नगर, बुद्धपुर रोड, कुतुबपुर मोला, रेवाड़ी (हरियाणा) 123401

फरीदाबाद
मो. 7023101162, ई–10, नेहरू ग्राऊंड, बीकानेर स्वीट्स के पीछे, ऐन.आई.टी. फरीदाबाद पिनकोड 121001

पंजाब

लुधियाना
मो. 07023101153
311/312, बी–17, गुलाटी डांस क्लास के पास, भारत नगर, लुधियाना 141001

चण्डीगढ़
मो. 07073452176
मकान नंबर 3468 ग्राउंड फ्लोर, सेक्टर – 46–सी, चंडीगढ़–160047

उत्तर प्रदेश

मेरठ
मो. 09257110802
38, श्री राम पैलेस, दिल्ली रोड, नियर सब्जी मंडी, माधव पुरम, मेरठ

लखनऊ
मो. 09351230395, मकान नंबर 563/193, चित्रगुप्त नगर, आलमबाग (रसगन मिष्ठान भंडार के पास) लखनऊ (उ.प्र.) 226005

राजस्थान

जोधपुर
मो. 08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर जोधपुर (राज) 342001

कोटा
मो. 07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं. 2–वी–5 तलवंडी, कोटा (राज.) 324005

अजमेर
नारायण सेवा संस्थान C/O श्रीमती. कैलाश उपाध्याय पत्नी स्वर्गीय श्री विश्वप्रकाश उपाध्याय मकान नं. 68, माली मोहल्ला, आनासागर लिंक रोड, शिव मार्ग, कृष्णा गंज, अजमेर (राजस्थान) 305001
मो. नं. 9216022978

बिहार

पटना
मो. 09257110805, मकान नं.–23, किताब भवन रोड नॉर्थ एस.के. पुरी, पटना–13

गुजरात

सूरत
मो. 09529920082
27, सम्राट टाऊनशिप, सम्राट स्कूल के पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा
मो. 09529920081
मकान नंबर ए–2/5, सिद्धार्थ पार्क, साईदीप नगर के पास, टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स के सामने, न्यू वीआईपी रोड, बड़ौदा (गुजरात), पिनकोड 390022

अहमदाबाद
मो. 09529920080, 08306008208
07/ए, कपिलकुंज सोसायटी, विजय नगर के सामने, मेट्रो स्टेशन, नारायणपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) पिनकोड 380013

(कर्नाटक)

बेंगलुरू
मो. 09341200200
हाउस नंबर 6/2, ग्राउंड फ्लोर, मुदलियार स्ट्रीट, ड्रेस सर्कल के पीछे, शॉपिंग मॉल, नुटकालाप्पा सर्कल, बसवनगुडी, बैंगलोर (कर्नाटक) 560004

मध्य प्रदेश

ग्वालियर
मो. 9216022976,मकान नंबर 197, कुंडी रोड, गली नंबर 05, कोटेश्वर कॉलोनी, कोटेश्वर मंदिर के सामने, गिर्द, ग्वालियर (म.प्र.) 474003

नारायण निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस
मो. 07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे, अलीगढ़ रोड, हाथरस

मथुरा
मो. 07023101163
हाउस नं. 10/10ए, श्रद्धानंद स्कूल के सामने, राधा नगर, कृष्णा नगर, मथुरा (उत्तर प्रदेश) 281004

अलीगढ़
मो. 07023101169
एम.आई.जी. –48 विकास नगर, आगरा रोड़, अलीगढ़

तेलंगाना

हैदराबाद
मो. 09573938038
लीलावती भवन, 4–7–122/123 इसामिया बाजार, कोठी, संतोषी माता मंदिर के पास, हैदराबाद –500027

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद
मो. 07073474435
श्रीमती शीला जैन निःशुल्क फिजियोथेरपी सेंटर, बी.–350 न्यू पंचवटी कॉलोनी, गाजियाबाद – 201009

लोनी
मो. 9257110802
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार, लोनी बन्थला, चिरोड़ी रोड (मोक्षधाम मन्दिर) के पास लोनी, गाजियाबाद

आगरा
मो. 07023101174
मकान नंबर ई–52, किडजी स्कूल के पास, कमला नगर, आगरा (उत्तर प्रदेश) पिन कोड रू 282005

छत्तीसगढ़

रायपुर
मो. 07869916950, 08306004806
मीरा जी राव, म.नं.–29/500 टीवी टावर रोड, गली नं.–2, फेस–2 श्रीरामनगर, पो.–शंकरनगर,रायपुर

गुजरात

राजकोट
मो. 09529920083
बी–33, शिव शक्ति कोलोनी, जेटको टावर के सामने, यूनिवर्सिटी रोड, राजकोट 360005

उत्तराखण्ड

देहरादून
मो. 07023101175
साई लोक कॉलोनी, गांव कार्बरी ग्रांट, शिमला बाय पास रोड, देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी
मो. 08588835711, 07073452155
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी, दिल्ली–6

शाहदरा
मो. 07073474435, बी–85, ज्योति कोलोनी, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा

हरियाणा

अम्बाला
मो. 07023101160
सविता शर्मा, 669, हाऊसिंग बोर्ड कोलोनी अरबन स्टेट के पास, सेक्टर–7 अम्बाला

कैथल
मो. 08696002432
फ्रेंड कॉलोनी, गली नम्बर 3 करनाल रोड़, हनुमान वाटिका के पास कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर
मो. 09928027946, 09257110807
बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल एण्ड रिचर्स सेन्टर बी–50–51 सनराईज सिटी, मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा, जयपुर

मध्य प्रदेश

इन्दौर
मो. 09529920087
43, चन्द्रलोक कॉलोनी खजराना रोड, इंदौर–452018

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार...

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,000 रू.	50,000 रू.	1,10,000 रू.
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन-नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रू.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि			
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	2,25,000 रू.

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों के सपनों को करें साकार

1 एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/-
5 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	55,000/-
20 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	2,20,000/-

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe Paytm
narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

आप मुझे
राखी
बांधेंगे ?
राखी के इस पावन बंधन पर, किसी दिव्यांग को कृत्रिम अंग का उपहार दें
इनके जीवन भर की मुस्कान के कारण बनें।
कृत्रिम अंग सहयोग
10,000/-
www.narayanseva.org
0294-6622222

दिव्यांग एवं निर्धन कन्याओं के बनें धर्म माता-पिता

कन्यादान (एक दिव्यांग कन्या)
₹1,00,000

गृहस्थी उपहार सहयोग (प्रति जोड़ा)
₹ 51,000

पाणिग्रहण संस्कार (प्रति जोड़ा)
₹ 21,000

श्रृंगार सहयोग (प्रति जोड़ा)
₹11,000

मेहंदी और हल्दी रस्म (प्रति जोड़ा)
₹ 5,100

Donate via UPI

दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह-उदयपुर

दिनांक: 19-20 सितम्बर 2026

आपश्री सपरिवार सादर आमंत्रित है।

सेवा–पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 अगस्त, 2026 आर. एन. आई. नं. DELHIN/2017/73538, स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह मो. 09871320593 द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली–110006 से प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, फरीदाबाद से मुद्रित। मुद्रित संख्या 1,00,000 (मूल्य) 5 रूपये